IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छत्तीसगढ़ राज्य के प्रमुख पर्यटन एवं धार्मिक स्थल

DR. REENA TAMRAKAR
GUEST ASST. PROFESSOR
GOVT.V.Y.T. PG AUTONOMUS COLLEGE DURG (C.G.)

Abstract- छत्तीसगढ़ भारत का एक राज्य हैं, इसका गठन 1 नवंबर 2000 को हुआ था , और यह भारत का 26वॉ राज्य हैं, पहले यह मध्यप्रदेष के अंतर्गत आता था, कहते हैं कि एक समय इस क्षेत्र में 36 गढ़ थे इसलिए इसका नाम छत्तीसगढ़ पड़ा, किन्तु गढ़ों में वृद्धि हो जाने पर भी इनके नाम में काई परिवर्तन नही आया।

शब्द कुंजी – छत्तीसगढ, प्राचीन, पर्यटन एवं धार्मिक स्थल

प्रस्तावना–

छत्तीसगढ़ भारत का एक राज्य हैं, इसका गठन 1 नवंबर 2000 को हुआ था , और यह भारत का 26वॉ राज्य हैं, पहले यह मध्यप्रदेष के अंतर्गत आता था, कहते हैं कि एक समय इस क्षेत्र में 36 गढ़ थे इसलिए इसका नाम छत्तीसगढ़ पड़ा, किन्तु गढ़ों में वृद्धि हो जाने पर भी इनके नाम में काई परिवर्तन नही आया। छत्तीसगढ़ भारत का ऐसा राज्य हैं, जिसे महतारी मॉ का दर्जा दिया गया हैं, छत्तीसगढ़ का पहले नाम दक्षिण कौशल था, ये 36 गढ़ों को अपने में समाहित करने के कारण छत्तीसगढ़ बन गया। ये क्षेत्र अत्यन्त प्राचीन काल से ही भारत को गौरान्वित करता रहा हैं। यहॉ के प्राचीन मंदिर एवं पर्यटन स्थल पौराणिकाल से ही विभिन्न संस्कृतियों का विकास केंद्र रहा हैं।

अध्ययन का उददेश्य

१.छत्तीसगढ की प्रमुख धार्मिक स्थलों के बारे में जानना.

२. छत्तीसगढ की प्रमुख सस्कृति के बारे में जानना.

शोध अभिकल्प-

विवरणात्मक एवं उपचारात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है

अध्ययन पद्धति-

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है.

प्रस्तुत विवेचन में हमने छत्तीसगढ की प्रमुख धार्मिक स्थलों एवं पर्यटनों स्थल एवं उनकी संस्कृतियों के बारे में जानने एवं समझाने का प्रयास करेंगे.

छत्तीसगढ़ राज्य का पर्यटन एवं धार्मिक स्थल –

छत्तीसगढ़ प्रारंभ से ही अपनी संस्कृति पर्यटन एवं धार्मिक स्थलों के कारण मुख्य आकर्षण का केंद्र बना हैं, इसमें कई मंदिर , गुफॉए और जलाषय षामिल हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य के प्रमुख पर्यटन स्थल –

महामाया मंदिर अम्बिकापुर – सरगुजा जिले के अम्बिकापुर स्थित महामाया मां के मंदिर की महिमा अपरमपार हैं, यहां छिन्नमस्तिका मां के दिव्य शक्तियों के कारण लोग श्रध्दा भाव से खिंचे आते हैं, कुंवार महिने की नवरात्री में छिन्नमस्तिका मां महामाया के सिर का निर्माण राजपरिवार के कुम्हार हर साल करते हैं, कहा जाता हैं कि महादेवी का धड़ अम्बिकापुर के महामाया मंदिर में स्थित हैं और उनका सिर बिलासपुर के रतनपुर मंदिर में रखा गया हैं,षरदीय नवरात्री पर यहां भक्तों की भारी भीड़ लगती हैं। मान्यताओं के अनुसार यह इनकावन शक्तिपीठों में से एक है।

राजिम प्रयागराज – छत्तीसगढ़ का प्रयाग राजिम रायपुर से 47 किलोमीटर की दुरी पर स्थित हैं। यह महानदी के तट पर स्थित हैं, यहां पैरी और सोंढुर नदियां महावदी में आकर मिलती है। माघ पूर्णिमा पर यहां प्रतिवर्ष मेला लगता हैं, जहां बड़ी संख्या में श्रध्दालु पवित्र महानदी में स्नान का पूण्य कमाते हैं, यहां भगवान राजीव लोचन का बेहद सुन्दर और प्राचीन मंदिर हैं, राजिम में मंदिरों का समूह भी हैं, जिनका विशेष महत्व हैं, यहां कुलेश्वर महादेव, राजेश्वर मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, पंचेश्वर महादेव मंदिर, भुलेश्वर महादेव मंदिर, नरसिंह मंदिर, बद्रीनाथ मंदिर, वामन वराह मंदिर, राजिम तेलीन का मंदिर, दानेश्वर मंदिर, रामचन्द्र मंदिर, सोमेष्वर महादेव मंदिर एवं षीतला मंदिर प्रमुख दर्षनीय हैं, जो अपनी वास्तुकला का परिचय देते हैं।

चम्पारण्य – रायपुर से 60 किलोमीटर दूर चम्पारण्य वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक वल्लभाचार्य जी की जन्म–स्थली होने के कारण यह उनके अनुयायियों का प्रमुख दर्षन स्थल है, यहां चम्पकेष्वर महादेव का पुराना मंदिर हैं, इस मंदिर के षिवलिंग के मध्य रेखाएं हैं, जिससे षिवलिंग तीन भागों में बंट गया हैं, जो क्रमषः गणेष, पार्वती व स्वयं षिव का प्रतिनिधित्व करते हैं।

डोंगरगढ़–

डोंगरगढ़ हावड़ा–मुम्बई रेल्वे मार्ग पर स्थित राजनांदगांव से 59 किलोमीटर दूर हैं, यहां पहाड़ी के उपर मां बम्लेश्वरी का विशाल मंदिर हैं, नवरात्री में यहां अपार जन समूह माता जी के दर्शन के लिए आते हैं, इस मंदिर का निर्माण राजा कामसेन ने करवाया था।

दन्तेवाड़ा –

दन्तेष्वरी मंदिर – बस्तर की आराध्या देवी मां दन्तेश्वरी की पावन नगरी दन्तेवाड़ा हैं, यह डाकिनी–षंखिनी नदी के संगम पर स्थित हैं, यह जगदलपुर से 85 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं, इसका निर्माण रानी भाग्येष्वरी देवी द्वारा कराया गया था। पुरातात्विक महत्व के इस मंदिर में मां दन्तेश्वरी के दर्षन के लिए भक्तों को सात दरवाजों से होकर गुजरना पड़ता हैं, माता के दर्षनार्थी युवकों को धोती पहनना अनिवार्य होता हैं। धोती की व्यवस्था मंदिर में ही रहती हैं,। दन्तेवाड़ा में भैरव बाबा का एक प्रमुख मंदिर षंखिनी नदी के दूसरे तट पर स्थित हैं। संगम स्थल पर एक विषाल षिलाखंड में एक पद चिन्ह माना जाता हैं। दन्तेष्वरी मंदिर के पास ही आदिवासी समाज के प्रमुख देव भीमा देव जो कि अकाल और बाढ़ से बचाने वाले माने गये हैं, उनकी विषेष प्रतिमा स्थित हैं।

बारसुर – बस्तर की ऐतीहासिक नगरी बारसूर को नागवंषीय राजाओं की राजधानी होने का गौंरव प्राप्त हैं, यह जगदलपुर दन्तेवाड़ा मार्ग में गीदम से 23 किलोमीटर दूर हैं। यहां 11वीं, 12 वीं षताब्दी की बत्तीसगी मंदिर, देवरली मंदिर, चन्द्रादित्य मंदिर, मामा–भांजा मंदिर प्रसिध्द मंदिर हैं। बारसूर की विषाल गणेष भगवान की प्रतिमा प्रसिध्द हैं। नारायण गुड़ी मंदिर का गरूड़ स्तम्भ व पेद्दम्मा गुड़ी की दुर्गा मूर्ति दन्तेवाड़ा के दंतेष्वरी मंदिर में सुरक्षित हैं।

तुलार – अबूझमाड़ के माड़ क्षेत्र में दो पहाड़ियों के मध्य स्थित षिवलिंग पर सारे समय स्वच्छ, निर्मल जल टपकता रहता हैं। यहां का प्रसिध्द षिवलिंग तुलार के नाम से जाना जाता हैं, यह प्रसिध्द् बारसुर नगरी से 42 किलोमीटर दूर स्थित हैं।

गुप्तेष्वर– दक्षिण बस्तर में शबरी नदी के किनारे स्थित इस स्थान पर पुरातात्विक उत्खनन के उपरान्त 5 वीं, 6 वीं शताब्दी के कल्चुरी षासनकाल की मूर्तियां, मंदिर व बावड़ी आदि मिली हैं। टीलों की खुदाई के उपरान्त षिव मंदिरों का विकास समूह निकला हैं।

ढ़ोंढ़रेपाल – दरभा विकासखण्ड में स्थित यह प्राचीन भारतीय मंदिर कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं, त्रिरथशैली में निर्मित तीन मंदिरों के समूह के आज मात्र अवषेष रह गये हैं, मगर खण्डहर का हर पत्थर अतीत की सुन्दरता का गुणगान करना परिलक्षित होता हैं।

आरंग – रायपुर से संबलपुर जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग 6 पर रायपुर से 36 किलोमीटर दूरी पर स्थित आरंग एक प्राचीन नगरी हैं, जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता हैं, बाद्य देवल मंदिर एवं महामाया मंदिर यहां के पौराणिक मंदिरों में से एक हैं।

रतनपुर – आराध्य मां महामाया षक्तिपीठ में से एक हैं, यहां कल्चुरी नरेष रत्नसेन ने की थी, यहां अनेंकों सुन्दर पुराने मंदिर, जलाषय तथा प्राचीन किले के अवषेष हैं।

खल्लारी – महासमुन्द जिले से लगभग 22 किलोमीटर दूर स्थित हैं, यहां पास की एक पहाड़ी पर एक षिलाखण्ड हैं, जो सती स्तम्भ का एक भाग प्रतित होता हैं, यह सिन्दूर से पुता हुआ हैं, और खल्लारी माता के रूप में पूज्यनीय हैं। चैत्र माह में पमर्णिमा को खल्लारी ग्राम में देवी के सम्मान में एक मेला लगता हैं।

सिरपुर – राष्ट्रीय राजमार्ग 6 पर आरंग से 24 किलोमीटर आगे बांये ओर लगभग 16 किलोमीटर पर सिरपुर स्थित हैं। प्राचीन काल में श्रीपुर के नाम से जाना जाता हैं। 5 वीं से 8 वो सदी के मध्य यह दक्षिण कोषल की राजधानी था। लगभग 1000 वर्ष पुराना पूर्णतः ईटों से निर्मित यहां का लक्ष्मण मंदिर, गंधेष्वर महादेव मंदिर तथा बौध्द विहार पर्यटकों को विषेष रूप से आकर्षित करता हैं।

षिवरीनारायण – महानदी और जोंक नदी के संगम पर बसा जांजगीर जिले में स्थित षिवरीनारायण बिलासपुर से 63 किलोमीटर पर स्थित हैं, यहां प्रसिध्द् विष्णु मंदिर हैं, यह षिवरीनारायण से 3 किलोमीटर दूरी पर स्थित हैं, यही पास में खरौद में प्रसिध्द लक्ष्मणेष्वर मंदिर हैं।

जगदलपुर – चौहानों का प्रसिद्ध नगर जगदलपुर संभागीय व जिला मुख्यालय है। पुरात्व के दृष्टिकोण से जगदलपुर का इतिहास काफी समृद्ध है। वहीं जगदलपुर का प्रसिद्ध राजमहल और उसमें स्थित माई दंतेश्वरी देवी का मन्दिर जगदलपुर का सबसे पवित्र स्थल है। आदिवासी संस्कृति की राजधानी जगदलपुर अपने सांस्कृतिक आयामों के कारण और भी ख्यातिलब्ध है। जगदलपुर का बस्तर दशहरा अपनी विशेष प्राचीन आदिवासी परम्परा का निर्वहन करने के कारण विश्व स्तरीय आदिम उत्सव में स्थान रखता है। इस प्रकार इस प्राचीन नगरी का महत्वपूर्ण स्थान है।

नारायणपाल का विष्णु मंदिर इन्द्रावती और नारंगी के संगम के आस-पास अवस्थित नारायणपाल ग्राम जो कि जगदलपुर जिले से लगभग 23 मील दूर है। नागवंशीय वास्तुकला में पल्लवित यह भव्य मन्दिर भगवान विष्णु का है। इसका निर्माण नरेश जगदेक् भूषण की पत्नी ने सन् 1111 में नारायणपाल नामक स्थान में करवाया था। मन्दिर अपने आदर्श बनावट के लिये सुविख्यात है।

जांजगीर– बिलासपुर जिले में यह स्थित है। यहां पर भगवान विष्णु का अपूर्ण मन्दिर स्थित है। धमधा (दुर्ग)- यहां पर प्राचीन किला एवं मन्दिर पाया गया है।

नागपुरा– दुर्ग जिले में स्थित नागपुरा जैनियों का धार्मिक स्थल है। यहां पर श्री उवसंम्हार पार्श्वतीर्थ का प्राचीन जैन मन्दिर स्थित है।

बालोद–यह भी दुर्ग जिले में स्थित है। यहां का सती का चबूतरा एवं प्राचीन किला प्रसिद्ध है। इसी के पास में झलमला स्थित है। जहां पर गंगा मैया का प्रसिद्ध मन्दिर है। हर 6 महीने में यहां पर नवरात्रि में मेला भरता है।

खरखरा – यह दुर्ग जिले में स्थित है। यहां का 1128 मीटर लम्बा मिट्टी का बना बांध प्रसिद्ध है।

देव-बालौदा–यहां का प्राचीन शिव मन्दिर प्रसिद्ध है।

सिंघोड़ा–यह सरायपालीए महासमुंद जिले में स्थित है। यहां सिंघोड़ा देवी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है।

तुरतुरिया–यह महासमुंद जिले में है। यहां बहरिया ग्राम के पास बाल्मीकी आश्रम स्थित है। यहां का काली मन्दिर भी प्रसिद्ध है।

पलारी–यह बलौदा बाजार के पास स्थित है। यहां का ईंटों से बना सिद्धेश्व मन्दिर प्रसिद्ध है।

गिरोधपुरी–यह संत घासीदास की जन्म-स्थली है। सतनाम पंथ स्थपाक संत शिरोमणि गुरु घासीदास बाबा जी ने मनखे मनखे एक समान माना हैए सत्य ही मानव का आभूषण है जय सतनाम!

दामाखेड़ा–यह सिमगाए रायपुर के पास स्थित है। यहां कबीरपंथियों की पीठ स्थित है।

सिहावा–यह नगरी से 8 किलोमीटर दूर स्थित है। श्रृंगी ऋषि पर्वत से छत्तीसगढ़ की जीवनदायिनी महानदी का उद्गम हुआ है। यहां के अन्य प्रसिद्ध मन्दिरों में कर्णेश्वर महादेवए मातागुडीए मोखला मांझी एवं भिम्बा महाराज है।

चंदखुरी–यह रायपुर के पास स्थित है। यहां का प्राचीन शिव मन्दिर प्रसिद्ध है।]]

रविशंकर जलाशय–यह धमतरी से 13 किलोमीटर दूर स्थित महानदी पर बना विशालकाय बांध है। इसे गंगरेल के नाम से भी जानते हैं। यह एक पिकनिक स्थल के पुर में भी विकसित हो चुका है।

केशकाल घाटी–यह बस्तर जिले में स्थित है। 5 किलोमीटर लम्बी सर्पाकार घाटीए राष्ट्रीय स्मारक गढ़धनोराए कोपेन कोन्हाड़ी में चौथी शताब्दी की प्राचीन गणेश मूर्ति इसकी प्रसिद्धि का कारण हैं। घाटी की समाप्ति पर उपर स्थित पंचवटी घाटी की मनोरम छंटा बिखेरता हैं।

ऋषभ तीर्थ गुंजी व शक्ति–बिलासपुर जिले में स्थित है। यहां का तमउदहरा झरनाए पंचवटी एवं गिद्ध पर्वत प्रसिद्ध है।

पाली–यह बिलासपुर जिले में स्थित है। यहां का 9 वीं शताब्दी का शिव मन्दिर प्रसिद्ध है।

लाफागढ़–यह बिलासपुर जिले में स्थित है। मेकाल पर्वत की उंची चोटी पर किला व जटाशंकरी नदी का उद्गम स्थल प्रसिद्ध है। यह कलचुरियों की प्रथम राजधानी रही है।

धनपुर–बिलासपुर जिले में स्थित धनपुर जैन तीर्थकर की मूर्ति एवं प्राचीन मन्दिर के लिये विख्यात है।

बिलाई माता–धमतरी नगर में स्थित बिलाई माता का मन्दिर प्रसिद्ध मन्दिर है। प्रत्येक नवरात्रि में यहां मेला लगता है।

बिरकोनी–महासमुंद जिले में स्थित है। यहां का चण्डीमाता का मन्दिर प्रसिद्ध है।

चंडी-डोंगरी–बागबाहरा के पास स्थित चण्डी-डोंगरी चण्डीमाता की विशाल प्रतिमा के कारण प्रसिद्ध है।

ब्राह्मनी–यह महासमुंद जिले में स्थित है। यहां पर ब्रह्मेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर व श्वेत गंगा नामक जल-कुण्ड प्रसिद्ध है।